d{kk & 4

fVIi.kh

5

nxk lDr

दुर्गा हमारे अपने आप में क्रिया है। दुर्गा का तात्पर्य है जहां पर आसानी से पहुँचना मुश्किल है। दुर्गा देवी आपने आप में वह शक्ति हैं जो हमें कठिनाईयों से बाहर लाती हैं। दुर्गा सूक्त के उच्चारण से कमजोरियां बाहर हो जाती है और हम किसी भी परिस्थिति का सामना करने की स्थिति में होते है।

mÌ’;

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- दुर्गा सूक्त का शुद्ध रूप में उच्चारण कर पाने में; और
- दुर्गा सूक्त का अर्थज्ञान कर पाने में ।

5.1 nxk lDr

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोमं मरातीयतो निदहाति वेदः ।

स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः ॥ १॥

jāta-vedase sunavāma somam arātī yato nidahāti vedaḥ |

sa naḥ parṣadati durgāṇi viśvā nāveva sindhum duritātyagniḥ || 1 ||

जिस उत्पन्न हुए इस चराचर जगत को जानने और प्राप्त होने वाले सर्वत्र विद्यमान ईश्वर के लिये हम लोग सभी सांसरिक पदार्थों का इकट्टा कर है। और जो अधर्मियों और दुष्टों के धन को निरन्तर नष्ट करता है वह विज्ञानस्वरूप ईश्वर जैसे मल्लाह नौका से नदी व समुद्र के पार पहुँचाता है वैसे हम लोगों को अत्यन्त दुर्गम और अतीव दुःख देने वाले इस संसार को पार करता है, वही इस ईश्वर रूप जगत् में खोजने के योग्य है।

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।

दुर्गां देवीꣳ शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः ॥ २॥

tām agni varṇām tapasā jvalantīm vairocanīm karma phaleṣu juṣṭām |

durgām devīgum śaraṇam aham prapadye sutarasi tarase namaḥ || 2 ||

देवी दुर्गा, जो अग्निवर्णा है, और तपस से धधक रही हैं, जो उस तपस रूपी अग्नि को (वैरोचिकीम) से उत्पन्न हैं, और जो कर्म फलों में पूजी जाती हैं। ऐसी दुर्गा जो देवी रूप हैं, के पदचरणों में आश्रय

(शरण) में हूँ। हे! दयालु देवी, मुझे इस जगत से पार लगाओं में तुम्हे प्रणाम करता हूँ।

अग्ने त्वं पारया नव्यों अस्मान्थ्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः ॥ ३॥

agne tvaṁ pārayā navyo asmān svastibhir-ati durgāṇi viśvā |
pūśca pṛthvī bahulā na urvī bhavā tokāya tanayāya śaṁyoḥ || 3 ||

हे! दुर्गा (अग्नि की तरह प्रकाशमय/कान्तिमय)! आप इस संसार को पार लगाने वाली हैं। आप हमारी आत्मा को अपने मंगलरूप प्रकृति से हमारी नैया पार लगायें। हमें इस दुःखमय संसार से पार लगायें। आप अपनी शुभ प्रकृति को इस भूमि ओर प्रकृति पर फैलायें जिसमें ये ऊपजाऊ और हरी हो जाये। हम बाहरी जगत में आपकी उपस्थिति महसूस करें। हमें परिपूर्ण करें, चाहे हम जैसे भी हैं आपके बच्चों पर हमेशा आशीर्वाद बनायें रखें ताकि हम हमारे अन्दर आपको महसूस कर सकें।

विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुन्न नावा दुरिताऽतिपर्षि ।
अग्ने अत्रिवन्मनसा गृणानोऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम् ॥ ४॥

viśvāni no durgahā jātavedas sindhun na nāvā duritātiparṣi |
agne atrivan manasā gṛṇāno'smākaṁ bodhyavitā tanūnām || 4 ||

हे जातवेद (वेदों की उत्पन्न कर्ता)! आप इस सम्पूर्ण संसार से दुखों का नाश करें। इस संसार रूपी समुद्र से हमें इस तरह तारें जैसे नाव

से सागर पर करते हैं। हे! अग्निरूपाः हम मन से आपका आह्वान करते हैं। जैसे अत्रि ऋषि करते थे। अब हमारे सभी प्राणी आपकी चेतना से अभिभूत हो गये हैं।

पृतना जितꣳ सहमानमुग्रमग्निꣳ हुवेम परमात्सधस्थात् ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवो अति दुरितात्यग्निः ॥ ५॥

pṛtanājitagum̐ sahamānam ugram agnigum̐ huvema paramāt-sadhasthāt |
sa naḥ parṣadati durgāṇi viśvā-kṣāmad-devo ati duritāty-agniḥ || 5 ||

आप युद्ध में अजेय है और दुश्मनों पर विजय पाने के लिए आगे बढती हैं। हम सबसे बडी सभा में आपका आह्वान करते हैं। अग्नि (दुर्गा) हमें इस विश्व की बडी कठिनाईयों (दुखो) से पार लगाये तथा अपनी दैवीय शक्तियों से शत्रुओं को जलाकर राख कर दें।

प्रत्नोषि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि ।
स्वाञ्चाग्ने तनुवं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभगमायजस्व ॥ ६॥

pratnoṣi kam-īḍyo adhvareṣu sanācca hotā navyaśca satsi |
svāñcā'gne tanuvam̐ piprayasvāsmabhyam̐ ca saubhagam āyajasva || 6 ||

आप हमेशा से (प्राचीन काल से) ही हमारे मन के आन्तरिक शत्रुओं को हटाकर हमारे आनन्द को बढाने के लिए प्रशंसा किये जाने योग्य हैं। आपकी अपनी चेतना के रूप में आप हमारी प्रसन्नता का स्रोत हैं। और हमारे बलिदान के लिए हमारे कल्याण का स्रोत हैं।

गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तन्तवेन्द्र विष्णोरनुसंचरेम ।

नाकस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम् ॥ ७॥

gobhir juṣṭám ayujo niṣiktaṁ tavëndra viṣṇor-anusañcárema |

nākásya pṛṣṭamabhi saṁvasāno vaiṣṇávīṁ loka iha mādayantām || 7 ||

आपकी उपस्थिति से मन और हृदय से हम बाहरी जगत् से अनासक्त हो गये हैं। ओ सर्वोत्तम! हम आपकी भक्ति में लीन हो गये है। हम आपका अहसास करें और अपने आपको सर्व–परमानंद आंनन्दमय चेतना में समर्पित करें ।

ॐ कात्यायनायं विद्महें कन्यकुमारिं धीमहि ।

तन्नों दुर्गिः प्रचोदयांत् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

Om kAtyAyanAya vidmahe kanyakumAri dheemahi |

tanno durgih prachodayAt ||

Oṁ śāntiḥ śāntiḥ śāntiḥ

ओम्! अपकी चेतना के लिए देवी कात्यापनी का ध्यान करें। और फिर उस सम्पूर्ण जगत् की माता, स्वरूप कन्याकुमारी पर ध्यान केन्द्रित करें।

शांति की स्थापना। शांति की स्थापना हो। शांति की स्थापना हो।

ikBxr i'u& 5-1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. ॐ जातवेदसे सुनवाम सोमं .... निदहाति वेदः ।
2. तामग्निवर्णां तपसा .... वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।
3. पृथ्वी पृथ्वी बहुला नं उर्वी भवा तोकाय .... शंयोः
4. विश्वानि नो दुर्गहा .... सिन्धुन्न नावा दुरिताऽतिपर्षि ।
5. गोभिर्जुष्टमयुजो .... विष्णोरनुसंचरेम ।

vkiu D;k lh[kk\

- दुर्गा सूक्त का अर्थ ।
- देवी अग्नि की शक्तियां ।

ikBkr i'u

- दुर्गा सूक्त को याद कर अपने शब्दों में लिखिए ।
- दुर्गा सूक्त का अपने शब्दों में सार लिखिए ।

mÙkjekyk

5.1

(1)

1. मरातीय॒तो
2. ज्वल॒न्तीं
3. तनं॑याय॒
4. जातवेद॒ः
5. निषिं॑क्त॒न्तवेन्द्र